International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

बिल्सी के सन्दर्भ विशेष में बदॉयू की ऐतिहासिकता

डॉ0 विजय
विभागाध्यक्ष एवं असि0 प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास विभाग,
इ0 सि0 स्0 सं0 से0 राजकीय महाविद्यालय,
पचवस, बस्ती, उत्तर प्रदेश,भारत।

शोध सरांश – लखनपुर शिलालेख में बदायूँ का नाम 'बौदा म्यूता' मिलता है। इस प्रकार अन्ततः इसको नाम बदायूँ पड़ गया। बदायूं रामगंगा नदी के पास स्थित है, यह शहर गुलाम वंश के सुल्तान इल्तुतमिश के कार्यकाल के दौरान दिल्ली सल्तनत की राजधानी भी रहा है। यह एक व्यापारिक केन्द्र रहा है। इसे सूफी संतों की भूमि तथा रूहेलखण्ड का दिल भी माना जाता है। लखनऊ संग्राहलय में प्रस्तर की लिपियों पर आधारित प्राचीन लेख जोकि बारहवीं शताब्दी का है, में बदायूं को वोदाम्यूता की संज्ञा दी गई है। कालान्तर में रुहेलों ने अपनी सत्ता स्थापित कर इस क्षेत्र को रुहेलखण्ड का नाम दिया। 1774 ई० में रुहेला हाफिज रहमत खाँ को मीरानपूर कटरा के युद्ध में अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने पराजित किया। रुहेलखण्ड अवध के अधीन हो गया जिसे अवध के नवाब ने 1803 ई० में अंग्रजों को अपनी देनदारी के बदले दे दिया। अंग्रेजों ने बरेली को रुहेलखण्ड कमीश्नरी का मुख्यालय बनाया। बदायूँ को जिला बनाकर इसका मुख्यालय सहसवान को बनाया। 1838 ई० में जिले का मुख्यालय बदायूँ नगर को बना दिया गया। बदायूँ में बड़े सरकार (सुल्तानुल आरफीन) व छोटे सरकार (हजरत शाह विलायत ख्वाजा बदरुद्दीन) की जिआरतों में संगीत की गंगा सदैव बहती रही है। इन्हीं के कारण बदायूँ को बदायूँ शरीफ का दर्जा मिला है। इसकी तहसील बिल्सी को भी प्रर्याप्त पहचान मिल चुकी है। यद्यपि बिल्सी का इतिहास प्राचीन नहीं है फिर भी यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है।

कूट शब्द – बौद्धमऊ, टकसाल, सती मन्दिर, बिरुआ बाडी, ककोड़ा, बदायूँ शरीफ।

बदायूँ जनपद गंगा तथा रामगंगा नदियों के दोआब में रूहेलखण्ड मण्डल के दक्षिणी पश्चिमी भाग में स्थित है। प्राचीन समय में बरेली व फर्रुखाबाद के साथ–साथ बदायूँ भी पांचाल राज्य का अंग था। बदायूँ विभिन्न कालखण्डों में में तोमर वंशीय राजपूतों, गुलाम वंश के शासकों, सैय्यद वंश के सुल्तानों एवं रुहेलों की राजधानी थी। पुरातन गाथाओं में जहाँ सहस्त्रबाहु, परशुराम, शुक्राचार्य आदि पौराणिक व्यक्तियों का

सम्बन्ध यहां से मिलता है, वहीं सल्तनतकालीन इल्तुतमिश और अलाउद्दीन खिलजी तथा मुगलकालीन कुतुबुद्दीन कोका व नबाब फरीद जैसे पराक्रमी बदायूँ के सूबेदार रहे। महाभारत काल में बदायूँ नगर का नाम 'भदावन' था। यह चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य का महत्वपूर्ण भाग था। सम्राट अशोक ने यहां बौद्ध धर्म को प्रचार किया और इसका नाम 'बौद्धमऊ' रखा। हर्षवर्धन के अधीनस्थ राजा महिपाल जो वैदिक धर्म से प्रेरित था, ने इसका नाम 'वेदामऊ' रखा था। यह वेदो की शिक्षा के लिए विख्यात स्थल था। लखनपुर शिलालेख में बदायूँ का नाम 'बौदा म्यूता' मिलता है। इस प्रकार अन्ततः इसको नाम बदायूँ पड़ गया। बदायूं रामगंगा नदी के पास स्थित है, यह शहर गुलाम वंश के सुल्तान इल्तुतमिश के कार्यकाल के दौरान दिल्ली सल्तनत की राजधानी भी रहा है। यह एक व्यापारिक केन्द्र रहा है। इसे सूफी संतों की भूमि तथा रूहेलखण्ड का दिल भी माना जाता है। लखनऊ संग्राहलय में प्रस्तर की लिपियों पर आधारित प्राचीन लेख जोकि बारहवीं शताब्दी का है, में बदायूं को वोदाम्यूता की संज्ञा दी गई है। इतिहासकार रोज ख़ान लोधी के मतानुसार सम्राट अशोक ने यहॉ एक बौद्ध विहार और किले का निर्माण कर, स्थल का नामकरण बुद्धमऊ (बुधौन किला) किया। स्मिथ महोदय के अनुसार, बदायूँ का नाम अहीर राजकुमार बुध के नाम पर पड़ा था।

बदांयू के साथ जुड़ी प्रामाणिक घटना 1396 ई0 में कुतुब–उद–दीन ऐबक द्वारा इस पर किया गया अधिकार है। 1801 ई0 में अवध के नवाब द्वारा इसे ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया गया था। 1911 ई0 में संयुक्त प्रांत के रूहेलखण्ड डिवीजन में, बदांयू ब्रिटिश भारत का एक नगर व जिला था। बदायूँ में मुगलकाल तक अनेक स्थलों पर घने जंगल थे। काँटेदार घने जंगल यहाँ के निवासियों के सुरक्षा कवच थे। सहसवान और बिसौली के मध्य स्थित बरौलिया गुफा अथवा सुरंग का अवशेष है। यह गुप्तकालीन ईटों से निर्मित है। इस क्षेत्र पर कटेहरिया राजपूतों का शासन था। यह लोग मुस्लिम सेनाओं से सदैव छापामार युद्ध पद्धति से संघर्ष करते रहते थे। गहड़वाल शासक जयचन्द्र के वंशजों ने मुहम्मद गौरी से पराजित होकर बदायूँ में उसैत को अपनी राजधानी बनायी थी। बदायूँ दिल्ली सल्तनत का टकसाली शहर था। दिल्ली सल्तनत के सिक्के यहीं ढाले जाते थे। फिरोज तुगलक ने बदायूँ के जंगलों को अपनी शिकारगाह के रूप में प्रयोग किया था।

18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अफगानिस्तान के रोह प्रदेश से रुहेले कटेहर में आये और भाड़े के सैनिकों के रूप में कार्य करने लगे। कालान्तर में रुहेलों ने अपनी सत्ता स्थापित कर इस क्षेत्र को रुहेलखण्ड का नाम दिया। 1774 ई० में रुहेला हाफिज रहमत खाँ को मीरानपूर कटरा के युद्ध में अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने पराजित किया। रुहेलखण्ड अवध के अधीन हो गया जिसे अवध के नवाब ने 1803 ई० में अंग्रजों को अपनी देनदारी के बदले दे दिया। अंग्रेजों ने बरेली को रुहेलखण्ड कमीश्नरी का मुख्यालय बनाया। बदायूँ को जिला बनाकर इसका मुख्यालय सहसवान को बनाया। 1838 ई० में जिले का मुख्यालय बदायूँ नगर

को बना दिया गया। सन् 1857 ई० के विद्रोह के समय 14 मई 1857 ई० को बदायूँ में क्रांति की लहर दौड़ गई। सभी अंग्रेज अधिकारी बदायूँ छोड़कर भाग गये। अब्दुल रहीम खाँ विद्रोहियों के नेता थे। कई महीनों बाद देसी सेनाओं को 27 अप्रैल 1858 ई० को जनरल पैनी ने ककराला में हराकर ब्रिटिश शासन की पुनः स्थापना की। स्वतंत्रता संग्राम में बदायूँ के लोगों ने खूब बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। असहयोग आन्दोलन के समय यहाँ के प्रमुख नेता मौलाना माजिद बदायूँनी को जिनके अनुरोध पर मार्च 1921 ई० में गांधी जी पहली बार बदायूँ पधारे। बदायूँ के मुलड़िया गाँव में आस–पास के जनपदों से लोगों ने आकर नमक कानून तोड़कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत की थी। बदायूँ के उग्रवादी नेताओं में चौधरी बदन सिंह प्रमुख थे।

कला एवं संस्कृति की दृष्टि से बदायूँ प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है। बिसौली कस्बे का फिरोजपुर किला, बिसौली व उझानी तथा बदायूँ व अलापुर नगर सुहावन का किला, रुदयान में 10 वीं शताब्दी में निर्मित भवानी देवी मंदिर, दातागंज मार्ग पर स्थित सूरजकुन्ड इत्यादि ऐतिहासिक स्थल है। बिल्सी, बिसौली, उझानी व कादर चौक के किलों का निर्माण रुहेलों के काल में हुआ था। बदायूँ में सती प्रथा का बहुत प्रचलन था। सतियों की समाधियों (मठियों) को वर्तमान में सती मन्दिर कहा जाता है। बदायूँ के सोथा मोहल्ले के मौलवी टोला में स्थित जामा मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था। मौलाना अहमदउद्दीन पेशावरी, जहान्दाशाह, अलाउद्दीन आलमशाह का रोजा (सैय्यद मखदूमा जहाँ का मकबरा), शेख अब्दुलबकी चिश्ती, नवाब फरीद, नवाब इखलास खाँ, नवाब अब्दुल्लाखाँ, मियाँ उजाले शह की मजार इत्यादि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल हैं। हाफिज असादुल्ला खान की मस्जिद पर सन् 1431 ई० का मुबारक शाह सैय्यद का अभिलेख उत्कीर्ण है।

बदायूँ–बरेली मार्ग की पुरानी सड़क पर स्थित बिरुआ बाडी के मन्दिर को बिल्सी बाडी भी कहते हैं। अनुश्रुति है कि यहाँ एक फूलों की बगिया थी जिसमें बिरुआ नामक माली रहता था। उसी की याद में बने इस मन्दिर से प्रत्येक वर्ष श्री राम की बारात यहीं से शुरू होकर रामलीला मैदान तक जाती है। बदायूँ नगर में गांधी मैदान में लगने वाले रामलीला मेले में नुमाइस बहुत ही आर्कषक होती है। बदायूँ का सबसे प्रसिद्ध मेला ककोड़ा का है। यह दीपावली के बाद कार्तिक पूर्णिमा पर कादरचौक से तीन मील दूर ककोड़ा गांव में गंगा के किनारे कई शताब्दियों से लगता आ रहा है। 6–7 दिनों तक चलने वाले इस मेले में लाखों लोग गंगा में स्नान करते हैं। ककराल का नाम ककोड़ा पड़ा क्योंकि इस क्षेत्र में केकड़ों की अधिकता है। बदायूँ कासगंज मार्ग पर गंगा के किनारे कछला घाट में प्रत्येक पूर्णिमा को मेला लगता है। बलदेव छठ का मेला खोसरा (बिल्सी), सुनक तथा रुखड़ा (बदायूँ तथा दातागंज में) के शिवरात्रि का मेला, बजीरगंज के पास वान खेड़ा में चैत्र की पूर्णिमा देवी का मेला तथा इसी समय नगला शर्की (बदायूँ नगर) का झंडियों का मेला अति महत्वपूर्ण है। जेठ माह में दातागंज से चार मील दूर हदीश में स्थित मजार पर लगने वाला मेला भी प्रसिद्ध

है। पशुओं के विक्रय हेतु बदायूँ में नकासे लगते हैं, जिनमें उझानी, बिल्सी, रमजानपुर, कौलहाई, कासिमपुर, पृथ्वीपुर, करनपुर, अलापुर, कोट, मूसाझाग, दातागंज, कादरबाद, जूनाबई व जगन्नाथ के नकासे प्रसिद्ध हैं।

प्राचीन समय में पांचाल के विद्वान वैदेह राजा जनक के दरबार में आश्रय पाते थे। अहिक्षत्र जैनमत के 23वें तीर्थकर पार्श्वनाथ की तपस्या स्थली थी। मध्यकाल में बदायूँ बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों, सूफीसंतों, दरवेशों का केन्द्र बन गया। जियाउद्दीन बरनी ने लिखा है कि बलबन के दरबार में काजियों और सैय्यदों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी अकबर के नौ रत्नों में से एक थे। इन्होंने 'मुन्तखब–उल–तवारीख' नामक कृति की रचना के साथ–साथ रामायण, महाभारत व अथर्ववेद का फारसी में अनुवाद किया। सहसवान क्षेत्र शास्त्रीय संगीत का प्रमुख केन्द्र रहा है। बदायूँ में बड़े सरकार (सुल्तानुल आरफीन) व छोटे सरकार (हजरत शाह विलायत ख्वाजा बदरुद्दीन) की जिआरतों में संगीत की गंगा सदैव बहती रही है। इन्हीं के कारण बदायूँ को बदायूँ शरीफ का दर्जा मिला है। इसकी तहसील बिल्सी को भी प्रर्याप्त पहचान मिल चुकी है। यद्यपि बिल्सी का इतिहास प्राचीन नहीं है फिर भी यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है। स्पष्ट है कि बदांयू की इतिहास अत्यंत समृद्धशाली है।

सन्दर्भ

1. Haibullah, ABH , The Foundation of Muslim Rule in India
2. Sunil Kumar, Emergence of Delhi Sultantae
3. Zia-ud-din-Barni, Fatwa-i-Jahandari
4. Habib and Nizami, Delhi Sultanate
5. Petter, Jacson, The Delhi Sultanate: A Political and Military History Archived, 2014
6. AL Srivastava, Delhi Sultanate 2016
7. Vincent A Smith, The Oxford History of India: From the Earliest Times to the End of 1911
8. William Hunter (1903), A Brief History of the Indian Peoples
9. J.A. Page, Guide to the Qutb , Delhi, 1927